कहानी कुछ हटकर

प्रेरितों के काम पुस्तक में सांस लेने के लिए एक पृथक और रोमांचक सुगंध भरी ताज़ी हवा चलती है। लोग उन घटनाओं का अनुभव अपने जीवन में कर रहे थे जिनके बारे में पहले केवल सुना ही गया था। इस पुस्तक के आगे बढ़ने के साथ-साथ, पाठक परमेश्वर के साथ मनुष्य जाति के सम्बन्ध के इतिहास के मार्ग पर आए मोड़ से चकित हो जाता है।

अचानक ही, धार्मिक जीवन के बारे में सब कुछ बदल गया था। यीशु को मसीह मानने वालों के जीवनों में बहुत से बदलाव आए। इनका कारण क्या था?

प्रेरित लोग आसाधारण बन चुके थे। उनके व्यवहार, उनके विचार और उनके मन पूरी तरह से बदल गए थे। पहले वे, घबराए हुए, थके हुए, हताश, सहमे हुए और निराश थे। प्रेरितों के काम में उन्हें रोमांचक, युद्धरत, साहसी, निर्भीक, आक्रामक और उसके प्रति पीड़ा सहकर भी वफ़ादार रहने वाले प्रेरितों के रूप में दिखाया गया है जिसे उन्होंने आकाश के बादलों में उठाए जाते देखा था। वे उसकी कहानी किसी को भी जो सुसमाचार को सुनने का इच्छुक था, बताने को तैयार थे। वे इतने साहसी और दृढ़ हो रहे थे कि यहूदी अगुवे, याजक, ग्रन्थी और यहां तक कि महासभा के लोग भी उनसे भयभीत हो गए थे। सताव यहां तक बढ़ गया था कि बहुत से नये चेलों की मृत्यु अथवा कैद तक हो रही थी।

चेले, जो कि पहले पुरानी व्यवस्था के प्रति वफ़ादार थे अब एक नई वाचा के आज्ञाकारी बन गए थे। उनकी आराधना आत्मा और सच्चाई से थी, उनका आत्मिक काम हृदय से था, उनकी शिक्षाएं वही थीं जो उन्हें यीशु से मिली थीं, उनकी वफ़ादारी ''मृत्यु तक विश्वासी'' बने रहने वाली थी, और उनकी संगति पारिवारिक सम्बन्ध की तरह बढ़ती जा रही थी। उनके जीवनों में बहुत महत्वपूर्ण बदलाव आए, और प्रेरितों के काम की पुस्तक उन बदलावों को ब्यान करने वाली एक इतिहास की पुस्तक है।

चेलों के आत्मिक जीवनों में कौन सी बात ने प्रवेश करके उन्हें नई शक्ति और जोश दिया था? एक नई वसीयत अर्थात वाचा आत्मा की प्रेरणा पाए प्रेरितों द्वारा प्रकट की गई थी, जो क्रूस पर यीशु की मृत्यु से प्रभावी हुई थी।

उनका प्रचार नया था

चेले यीशु का प्रचार प्रभु और मसीह के रूप में करने लगे थे। पतरस ने इन बदलावों के आरम्भ में यह घोषणा की थी कि परमेश्वर ने यीशु को मसीह बना दिया है (प्रेरितों 2:36)। ''मसीह'' व्यक्तिवाचक नाम नहीं है; स्वर्गदूत ने यूसुफ को बताया था

कि बालक का नाम यीशु रखा जाएगा (मत्ती 1:21)। ''मसीह'' उस पद का वह शीर्षक है जिस पर यीशु को प्रतिष्ठा दी गई है (फिलिप्पियों 2:9-11)। इस शब्द का अर्थ है ''अभिषिक्त'' अर्थात राजा होने के लिए अभिषिक्त। इसमें पुराने नियम के इब्रानी शब्द ''मसायाह'' का विचार मिलता है। चेलों का प्रचार था कि यीशु को परमेश्वर के दायें हाथ सिंहासन पर बिठा दिया गया है; इसलिए, वह मसीह अर्थात अभिषिक्त राजा है।

''प्रभु'' का अर्थ है ''स्वामी''; इसलिए, यीशु को पूरा अधिकार दिया गया है। यीशु ने कहा कि उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद उसे आकाश और पृथ्वी का सारा अधिकार दिया गया है (मत्ती 28:18), और सुसमाचार के प्रथम लिखित प्रवचन में पतरस ने घोषणा की कि स्वर्ग के परमेश्वर ने यीशु को ही प्रभु और मसीह भी ठहरा दिया है (प्रेरितों 2:32-36)। नये मसीहियों ने इस तथ्य का पूरी मेहनत और भक्ति से प्रचार किया, क्योंकि वे जानते थे कि परमेश्वर ने यहूदियों के पूर्वजों के साथ अब्राहम के दिनों से लेकर जितनी भी प्रतिज्ञाएं की थीं, वे सभी यीशु नाम के इसी व्यक्ति में पूरी हुई हैं।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में मिलने वाले मुख्य शब्द तथा वाक्यांश इन दावों को जारी रखते हैं। पतरस ने दावा किया कि मसीह के विषय में की गई सभी भविष्यवाणियां यीशु में पूरी हुईं (प्रेरितों 3:18)। उसने यीशु को ''कोने के सिरे का पत्थर'' भी कहा जिसे ''राज मिस्त्रियों ने तुच्छ जाना'' (प्रेरितों 4:11)। फिर पतरस ने दावा किया कि उद्धार किसी और के द्वारा नहीं, अर्थात किसी और नाम से नहीं (प्रेरितों 4:12)। बाद में, महासभा के सामने, पतरस ने ऐलान किया कि इसी यीशु को परमेश्वर के दाहिने हाथ बिठाकर महिमा दी गई थी (जो शासन करने वाले राजा के लिए अधिकार की गद्दी थी) और उसे ''प्रभु और उद्धारकर्त्ता'' (प्रेरितों 5:31) बनाया गया। उसने यहूदी विद्वानों और अगुओं के इस प्रतिष्ठित समाज में यह अतिरिक्त घोषणा की कि परमेश्वर ने इस्राएल जाति को मन फिराने और पापों की क्षमा का दान केवल यीशु के द्वारा ही प्रदान करना था (प्रेरितों 5:31)!

स्तिफनुस ने यीशु को ''उस धर्मी'' कहा, जो स्पष्ट तौर पर प्रतिज्ञा किए हुए मसीह की ओर संकेत था और ऐसा हवाला था जिसे केवल यहूदी लोग ही समझ सकते थे (प्रेरितों 7:52)। फिलिप्पुस ने खोजे को वचन सुनाकर यीशु को एक भेड़ के रूप में जो वध करने के लिए ले जाई जाती है और मेमने के रूप में जो अपने ऊन कतरने वालों के सामने चुपचाप रहती है, दिखाकर, यशायाह की भविष्यवाणी की व्याख्या की (प्रेरितों 8:30-35)। पौलुस ने घोषणा की कि इस्राएल के पूर्वजों के साथ किए गए मसीह सम्बन्धी सभी वायदे परमेश्वर ने पूरे कर दिए हैं (प्रेरितों 13:32, 33)। फिर उसने दाऊद के साथ की हुई प्रतिज्ञा की बात की कि उसके पुत्रों में से एक ने मसीह के सिंहासन पर बैठना था। उसने घोषणा की कि यीशु की मृत्यु से उस प्रतिज्ञा का नाश नहीं हुआ, क्योंकि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जिला दिया था (प्रेरितों 13:33-39)। पौलुस ने निष्कर्ष निकाला कि इन प्रतिज्ञाओं का पूरा होना यीशु में दी जाने वाली धार्मिकता थी। उसने इस बात में और जोड़ते हुए कहा कि कोई भी यहूदी व्यवस्था से धर्मी ठहराए जाने की आशा नहीं कर सकता है (आयत 39)।

बाद में प्रेरितों के काम, अध्याय 2 के पिन्तेकुस्त के दिन से लगभग बीस वर्ष बाद, पाठक को खतने की समस्या के फिर से उठने का पता चलता है जिसके कारण यरूशलेम में विशेष तौर पर कई बैठकें हुईं (प्रेरितों 15)। यहूदी पृष्ठभूमि वाले मसीही लोग व्यवस्था की रीतियों से, विशेषकर खतने की रीति से चिपके हुए थे। वे सभी नर बच्चों और मसीह में बपतिस्मा लेने वाले सभी वयस्क अन्यजाति पुरुषों का खतना करवाने की ज़बरदस्ती कर रहे थे। पौलुस और बरनबास ने अपनी पहली मिशनरी यात्रा पूरी कर ली थी (प्रेरितों 13; 14); और सीरिया के अन्ताकिया में भाइयों को, जिन्होंने उन्हें भेजा था उनके साथ घटित बातें बताते समय, उन्हें खतने की समस्या का सामना करना पड़ा। वे तीन साल से अपनी मिशनरी यात्रा में अन्य जातियों से आने वाले बिना खतना हुए लोगों को बपतिस्मा दे रहे थे, अब उनकी बात न मानने वाले कुछ भाइयों ने खतने का प्रश्न फिर से उठा दिया। यीशु का सौतेला भाई, याकूब स्पष्टत: यरूशलेम के अगुओं में से एक था और इस अवसर पर वह उनमें सबसे प्रमुख था (प्रेरितों 15:13–21)। उसने कहा कि ''दाऊद का डेरा'' उठाने की आमोस की भविष्यवाणी पूरी हो चुकी थी, इसलिए, मसीह की संगति में अन्यजातियों का बिना किसी विरोध के स्वागत किया जाना चाहिए। इस भविष्यवाणी में एक ऐसे समय की प्रतिज्ञा की गई जब मसायाह के शासन में सच्चे आराधक दाऊद के पुत्र अर्थात दाऊद के सिंहासन पर प्रतिज्ञा किए हुए मसीह के आत्मिक शासन को स्वीकार करेंगे। क्योंकि यह भविष्यवाणी पूरी हो चुकी थी, इसलिए अन्यजातियों के लोगों के लिए पुरानी व्यवस्था की रीतियों को पूरा करना जरूरी नहीं था। इससे खतने के प्रश्न का हल हो गया अर्थात मसीह की व्यवस्था में इसे पूरा करना जरूरी नहीं था।

यहूदियों के लिए जिनके पूर्वज पन्द्रह सौ वर्षों तक व्यवस्था का पालन करते रहे थे, यह प्रचार निश्चय ही नया था। प्रेरितों के काम में बाद के पद दिखाते हैं कि बहुत से यहूदी विभिन्न मण्डलियों को परेशान करते रहे।

उनकी आराधना अलग थी

मसीह की व्यवस्था में खतने की रीतियों की आवश्यकता नहीं थी। मसीही बनने वाले यहूदी अब फसह, पिन्तेकुस्त या डेरों के पर्व नहीं मनाते थे। उन्होंने जानवरों के बलिदान और उपज की अन्य प्रकार की भेंटें देना बन्द कर दिया था। वे अब याजक होने के लिए लेवियों के गोत्र की ओर नहीं देखते थे। उन्होंने अब दशमांश देना भी बन्द कर दिया था। उन्होंने ये सभी रीतियां तो छोड़ दी थीं, फिर वे मसीह की नई व्यवस्था में क्या करते थे?

लूका ने केवल इतना ही कहा है: ''वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे'' (प्रेरितों 2:42)। अब वे सत्य जानने के लिए, व्यवस्था की ओर नहीं बल्कि प्रेरितों की ओर देखते थे। वे फसह नहीं बल्कि प्रभु भोज खाते थे। वे अब दशमांश नहीं देते थे, बल्कि अपनी आमदनी के अनुसार और जहां आवश्यकता होती थी, वहां धन और वस्तुएं देते थे (या संगति करते थे[1])। वे यीशु मसीह के नाम में और यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना करते थे।

इन सभी रीतियों से उनकी आराधना में बहुत से बदलाव आए। प्रेरितों के काम की पुस्तक के सचेत पाठक को भिन्नता दिखाई देगी अर्थात उन्होंने प्रेरितों के प्रचार के कारण मन फिराया था, उन्होंने अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लिया था, और उन्हें परमेश्वर ने अपनी संगति में मिला लिया था (प्रेरितों 2:37-41)। इसलिए, वे इसी प्रकार आराधना करते थे जैसे यीशु ने उन बारह प्रेरितों की अगुआई में आराधना करने के उन्हें निर्देश दिए थे।

प्रेरितों के काम में इस बार आराधना की जिस बात का उल्लेख नहीं किया गया, वह है संगीत। पहले, ये लोग मूसा की व्यवस्था के अधीन आराधना में गाने के साथ साज़ों का प्रयोग करने के आदी थे। परन्तु, कलीसिया के आरम्भ से, नये नियम में आराधना के संगीत का जहां भी उल्लेख हुआ, वह पूरी मण्डली की ओर से साज़रहित कंठसंगीत था। यह संगीत एक दूसरे को सिखाने व उपदेश देने, भजनों, स्तुतिगानों तथा आत्मिक गीतों के साथ एक दूसरे से बात करने के लिए था। अपने-अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिए गाते हुए इन आराधकों के संगीत का प्रभाव केवल दूसरों पर ही नहीं बल्कि स्वयं उन पर भी पड़ता था (इफिसियों 5:19; कुलुस्सियों 3:16)। मसीह को स्वीकार करने वाले यहूदियों की आराधना में यह एक और नाटकीय परिवर्तन था।

मसीही बनने वाले प्रत्येक यहूदी को यह अहसास था कि यीशु और उसके विश्वास द्वारा परमेश्वर की एक नई इच्छा व्यक्त की गई है। यह समय श्रेष्ठ नाटक, परिवर्तन और रोमांच का था।

उनकी समझ स्पष्ट थी

यहूदी लोग उस व्यवस्था से जो अस्थाई थी और उससे भी बढ़कर उसमें व्यवस्था दिए जाने की बात थी, अपने पापों से धर्मी नहीं ठहराए जा सकते थे (यिर्मयाह 31:31, 32)। वह प्रतिज्ञा पूरी हुई जब मसीह महायाजक और राजा बना (इब्रानियों 8:1-13)। व्यवस्था केवल इस्राएल जाति के लिए तैयार की गई थी और उसे ही दी गई थी (निर्गमन 34:27, 28); इसकी परिकल्पना सब लोगों के लिए एक विश्वव्यापी व्यवस्था के रूप में कभी नहीं की गई थी।

व्यवस्था यीशु के आने तक यहूदियों की सहायता हेतु दी गई थी (गलतियों 3:19)। इसने ''स्कूल मास्टर'' अथवा ''शिक्षक'' के रूप में काम करना था (गलतियों 3:24)। मूसा की व्यवस्था मसीह के सुसमाचार को प्रकट किए जाने से इसका स्थान ''विश्वास'' ने ले लेना था (गलतियों 3:24, 25)। पुराने नियम की व्यवस्था अब्राहीम को उद्धार के लिए दी गई प्रतिज्ञा का भाग नहीं थी; यदि ऐसा होता, तो परमेश्वर अपने लोगों के उद्धार के लिए इसका इस्तेमाल करता (गलतियों 3:21, 22)। फिर, इस व्यवस्था से बैलों और बकरों के लहू से पापों का प्रायश्चित नहीं हुआ और न ही हो सकता था (इब्रानियों 10:4)।

इस व्यवस्था को मसीह द्वारा पूरा किया गया (लूका 24:44, 45), उसकी मृत्यु से मिटा दिया गया (इफिसियों 2:15), उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने से सामने से हटा दिया

गया (कुलुस्सियों 2:14) और ''पुरानी'' अथवा जीर्ण बना दिया गया (इब्रानियों 8:13)। यहूदियों को व्यवस्था से अलग कर दिया गया या क्रूस पर यीशु की मृत्यु के द्वारा मार दिया गया था। यह इसलिए पूरा हुआ ताकि यहूदी लोग आत्मिक रूप से मसीह के साथ मिल सकें (रोमियों 7:4)।

सारांश

अनुग्रह तथा क्षमा के लिए की गई सभी आत्मिक प्रतिज्ञाओं के पूरा होने को अब प्रेरितों के काम अर्थात इतिहास की पुस्तक में, देखा जा सकता है। मसीही लोग वे हैं ''जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं''; अर्थात मसीही लोगों को छुटकारे की असंख्य आशिषें मिलती हैं (1 कुरिन्थियों 10:11)। इन आत्मिक आशिषों का उन लोगों के पास अम्बार लग जाता है जो यीशु के पीछे चलते हैं।

परमेश्वर के साथ एक ''नया और जीवित मार्ग'' यीशु के लहू से समर्पित किया गया है (इब्रानियों 10:19, 20)। परमेश्वर के घर पर एक नया याजक, एक महायाजक ठहराया गया है जो कि यीशु मसीह है (इब्रानियों 10:21)। नई वाचा के कारण हर एक मसीही परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने के योग्य है (इब्रानियों 10:19-22)। हर एक मसीही को याजक माना जाता है, जो परमेश्वर को बलिदान भेंट कर सकता है (1 पतरस 2:5, 9)।

अब क्षमा और संगति मसीह की नई वाचा में मिलते हैं। उस वाचा के भीतर सब लोगों को अनुग्रह और क्षमा दी जाती है (इब्रानियों 8:10-12)। परमेश्वर की क्षमा पाकर रहना कितना अद्‌भुत है, क्योंकि पाप तो अब स्मरण ही नहीं किए जाएंगे!

प्रेरितों के काम इतिहास की एक मात्र पुस्तक है जो इन शानदार परिवर्तनों को दिखाती है। मसीह की नई वाचा के साथ नई आशिषें, धार्मिक गतिविधियों की एक नई प्रणाली, और इस जीवन में और पृथ्वी पर जीवन समाप्त होने के बाद परमेश्वर के साथ एक नया आश्वासन तथा आशा मिलती है।

पाद टिप्पणियां

[1]पृष्ठ 105 पर ''संगति'' पर चर्चा देखिए।